उदयन और वासवदत्ता

भारत के प्राचीन वज्जि गणतंत्र की राजधानी थी वैशाली। वैशाली नरेश चेटक के सात पुत्रियाँ थीं। तीसरी पुत्री मृगावती का विवाह कौशाम्बी पति शतानीक के साथ हुआ। रानी मृगावती उस युग की परम सुन्दरी मानी जाती थी। पाँचवी पुत्री शिवादेवी अवन्ती के राजा चण्डप्रद्योत की रानी थी।

एक दिन चण्डप्रद्योत की सभा में एक चित्रकार आया। उसने एक कलाकृति चण्डप्रद्योत को भेंट दी।

चित्र को बहुत देर देखने के बाद चण्डप्रद्योत ने अपने महामंत्री से कहा–

अमात्यवर ! पृथ्वी का यह सर्वश्रेष्ठ नारीरत्न तो हमारे महलों में होना चाहिए।

महामंत्री चकित होकर राजा की ओर देखने लगा।

परन्तु महाराज, राजा शतनीक तो आपके साढू हैं न?

चण्डमहासेन जिस वस्तु को चाहता है, उसमें रिश्ते नाते बाधा नहीं बन सकते।

चण्डप्रद्योत की बात सुनकर सभी एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने सामने आसन पर बैठे दूत को पुकारा–

वज्रजंघ ! तुम कौशाम्बी जाकर महाराज शतानीक से हमारा सन्देश कहो कि हम महारानी मृगावती को चाहते हैं। इसलिए वह हमें भेंट कर दे। बदले में जो चाहिए माँग ले।

महाराज की जैसी आज्ञा।

वज्रजंघ कौशाम्बी की ओर चल पड़ा।

लगभग चार दिन के प्रवास के बाद दूत कौशाम्बी की राजसभा में पहुँचा और राजा शतानीक को चण्डप्रद्योत का सन्देश सुनाया। सन्देश सुनते ही शतानीक क्रोध से भर उठे। बोले–

इस धृष्टता के लिए हम तुम्हारा सिर उड़ा सकते हैं, परन्तु दूत अवध्य होता है, इसलिए क्षमा करते हैं। फिर भी इसका फल तुम्हें अवश्य मिलेगा।

फिर पहरेदारों ने दूत की अच्छी तरह पिटाई की और धक्के देकर राजसभा से निकाल दिया।

फटे कपड़े, घायल हालत में दूत अवन्ती की राजसभा में वापस पहुँचा और चण्डप्रद्योत को पूरी घटना सुना दी।

उन कायरों की इतनी हिम्मत। मेरे दूत की पिटाई कर दी।

चण्डप्रद्योत ने सेनापति को आदेश दिया–

सेनापति कौशाम्बी पर आक्रमण की तैयारी करो।

चण्डप्रद्योत की सेना ने कौशाम्बी को चारों ओर से घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ।

राजा शतानीक सहित हजारों योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गये।

कौशाम्बी के मंत्रियों, सेनापतियों ने मिलकर निश्चय किया–

राज्य के गौरव की रक्षा के लिए हम आखिरी दम तक लड़ते रहेंगे।

मंत्रीवर ! देश की रक्षा के लिए आपका निर्णय वीरोचित है, परन्तु प्राण देकर भी यदि हम अपनी रक्षा नहीं कर सके तो?

इस प्रश्न पर सभी मौन रहे और महारानी की तरफ देखने लगे।